॥ ॐ श्रीसद्गुरवे नमः ॥

भारतीय संत-परम्परा की अद्वितीय कड़ी परम-पुरुषहू ते अधिक विश्ववंद्य
योगिराज अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मलीन संत सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज
के वरदपुत्र स्वामी भगीरथ दासजी महाराज के
पावन करकमलों में भक्ति-श्रद्धा सहित समर्पित

॥ अभिनन्दन-पत्र ॥

हे महर्षिजी के वरदपुत्र!

यहाँ की धरती को परम तत्त्ववेत्ता, परम विज्ञानी, जगत् त्राणकारी, अघारी, उदारी, धर्म कील सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज के लोकपावनकारी पाद-पद्मों के पराग को बहुबार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आज उन ब्रह्मविद् के ब्रह्ममय होने के बाद उनके ही वरदपुत्र को पाकर एक बार पुनः आह्लादित, पुलकित एवं उल्लसित हो गयी है।

हे भक्तवर!

आपने गुरु-भक्तिरूपी घोर तपस्या कर अपने जीवन को परम तपोमय बना लिया है। आपकी गुरु-भक्ति संसार में एक उदाहरण है।

'गुरु संगति गुरु होय' की उक्ति को चरितार्थ कर गुरु-प्रसाद को बाँटने के लिए हमारे समक्ष उपस्थित हुए हैं। आपके करुणामय इस रूप को पाकर हम बेसुध हो गये हैं।

हे हमारे दिव्य अतिथि!

आज विश्वकर्मा भगवान् पूजन के शुभ अवसर पर जगत् सृष्टिकर्ता का तत्त्वज्ञान प्राप्त कराने के लिए ही आपका शुभागमन हुआ है।

अखिल ब्रह्माण्ड नियन्ता के पावन करुणा का दिग्दर्शन कराने की अहैतुकी कृपा करेंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

हम भवभयहारी मंगलमूर्ति से आपके स्वस्थ एवं दीर्घजीवन की मंगलकामना करते हैं, ताकि भविष्य में हमें शान्त तरु की शीतल छाया मिल सके।

१६ सितम्बर, १९९२ ई०
विश्वकर्मा पूजन

कृपाकांक्षी
श्यामनारायण भगत, सरौनी बाजार, गोड्डा